

# GOLD STAR

VOL-2



# GOLD STAR

VOL-2





कवि

तू गंगा की अखिरल धारा सी, मैं बनारस का घाट बनूँ,  
तुझमे ही दूबा दिन भर, मैं तेरे जीवन का साख बनूँ!

2002 

का



2004 ●●●



# कर्ज

तू गंगा की अतिरल धारा सी, मे बनारस का घाट बनू,  
तुझमे ही रुबा दिन भर, मे तेरे जीवन का साख बनू।

2007 

क

तू गंगा की अखिरल धारा सी, मे बनारस का घाट बनूँ,  
तुझमे ही डूबा दिन भर, मे तेरे जीवन का साख बनूँ।



2006 ●●●



2008 ●●●



2005 ●●●







2001 ●●●



2002 ●●●



2003 ●●●



2004 ●●●



2005 ●●●



2006 ●●●



2007 ●●●



2008 ●●●